क़ब्र का इम्तिह़ान

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (المستطرف ج ۱ ص ۴۰ دار الفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

(क़ब्र का इम्तिह़ान)

येह रिसाला (**क़ब्र का इम्तिह़ान**)

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई-मेइल या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मक-त-बतुल मदीना

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात

MO. 9374031409 E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

क़ब्र का इम्तिहान[1]

शैत़ान लाख सुस्ती दिलाए येह बयान (28 सफ़ह़ात) मुकम्मल पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ आप अपने दिल में म-दनी इन्क़िलाब बरपा होता हुवा मह़सूस फ़रमाएंगे ।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार, ह़बीबे परवर दगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, जनाबे अह़मदे मुख़्तार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इर्शादे नूरबार है : "तुम अपनी मजलिसों को मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ कर आरास्ता करो क्यूं कि तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना बरोज़े क़ियामत तुम्हारे लिये नूर होगा।" (اَلْجَامِعُ الصَّغِیر ص ۲۸۰ حدیث ۴۵۸۰)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

याद रख हर आन आख़िर मौत है　*बन तू मत अन्जान आख़िर मौत है*
मरते जाते हैं हज़ारों आदमी　*आ़क़िलो नादान आख़िर मौत है*
क्या ख़ुशी हो दिल को चन्दे ज़ीस्त से　*ग़मज़दा है जान आख़िर मौत है*
मुल्के फ़ानी में फ़ना हर शै को है　*सुन लगा कर कान आख़िर मौत है*
बारहा इ़ल्मी तुझे समझा चुके
मान या मत मान आख़िर मौत है

1 : येह बयान **अमीरे अहले सुन्नत** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के 1416 सि.हि. के तीन रोज़ा सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ मदीनतुल औलिया मुलतान शरीफ़ में फ़रमाया। **मजलिसे मक-त-बतुल मदीना**

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रहमतें भेजता है। (مسلم)

क़ब्र की डांट

हज़रते सय्यिदुना **अबुल हज्जाज** समाली رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है, सरकारे मदीना, सुल्ताने बा क़रीना, क़रारे क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : जब मय्यित को **क़ब्र** में उतार दिया जाता है तो **क़ब्र** उस से ख़िताब करती है : ऐ आदमी तेरा नास हो ! तूने किस लिये मुझे **फ़रामोश** (या'नी भुला) कर रखा था ? क्या तुझे इतना भी पता न था कि मैं फ़ितनों का घर हूं, तारीकी का घर हूं, फिर तू किस बात पर मुझ पर अकड़ा अकड़ा फिरता था ? अगर वोह मुर्दा नेक बन्दे का हो तो एक **ग़ैबी आवाज़ क़ब्र** से कहती है : ऐ **क़ब्र** ! अगर येह उन में से हो जो **नेकी** का हुक्म करते रहे और **बुराई** से मन्अ़ करते रहे तो फिर ! (तेरा सुलूक क्या होगा ?) **क़ब्र** कहती है : अगर येह बात हो तो मैं इस के लिये **गुलज़ार** बन जाती हूं। चुनान्चे फिर उस शख़्स का बदन **नूर** में तब्दील हो जाता है और उस की रूह़ रब्बुल आ़-लमीन عَزَّوَجَلَّ की बारगाह की त़रफ़ **परवाज़** कर जाती है। (مُسْنَدُ اَبِیْ یَعْلٰی ج٦ ص٦٧ حديث٦٨٣٥)

मुबल्लिग़ों को मुबारक हो !

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस ह़दीसे पाक पर ज़रा ग़ौर तो फ़रमाइये कि जब भी कोई क़ब्र में जाता है चाहे वोह नेक हो या बद उस को क़ब्र में डराया जाता है। **दा'वते इस्लामी** के मुबल्लिग़ों ! **फ़ैज़ाने सुन्नत** का दर्स देने वालों ! अ़लाक़ाई दौरा बराए **नेकी की दा'वत** में शिर्कत करने वालों ! अपनी औलाद की सुन्नतों के मुत़ाबिक़ तरबिय्यत करने वालों ! और सुन्नतें सिखाने के लिये **इन्फ़िरादी कोशिश** करने

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जो शख़्स मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया। (طبرانی)

वालों को मुबारक हो कि क़ब्र में एक ग़ैबी आवाज़ नेकी का हुक्म करने वालों और बुराई से मन्अ़ करने वालों की ताईद व ह़िमायत करेगी और इस त़रह़ क़ब्र उन के लिये गुलज़ार बन जाएगी।

तुम्हें ऐ मुबल्लिग़ येह मेरी दुआ़ है
किये जाओ त़ै तुम तरक़्क़ी का ज़ीना

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मेरे बाल बच्चे कहां हैं ?

याद रखिये ! **क़ब्र** में सिर्फ़ **अ़मल** जाएगा, बुलन्दो बाला कोठियां, आ़लीशान मह़ल्लात, ऊंचे ऊंचे मकानात, मालो दौलत, बेंक बेलेन्स, वसीअ़ कारोबार, बड़े बड़े प्लोट, लह-लहाते खेत और ख़ुशनुमा बाग़ात, येह सब साथ **क़ब्र** में नहीं आएंगे। चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना अ़त़ा बिन यसार عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَفَّار फ़रमाते हैं : जब मय्यित को क़ब्र में रखा जाता है तो सब से पहले उस का **अ़मल** आ कर उस की बाईं रान को ह़-र-कत देता और कहता है : मैं तेरा **अ़मल** हूं। वोह मुर्दा पूछता है : **मेरे बाल बच्चे कहां हैं ?** मेरी ने'मतें, मेरी दौलतें कहां हैं ? तो **अ़मल** कहता है : येह सब तेरे पीछे रह गए और मेरे सिवा तेरी क़ब्र में कोई नहीं आया। (شَرحُ الصُّدُور ص ۱۱۱)

क़ब्र में डराने वाली चीज़ें

रात के अंधेरे में डर जाने वालों ! बिल्ली की म्याउं पर चौंक पड़ने वालों ! कुत्ते के भौंकने पर रास्ता बदल देने वालों ! सांप और बिच्छू

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तह़क़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया । (ابن سنی)

का सिर्फ़ नाम सुन कर थर-थराने वालों ! सुलगती हुई आग को दूर से देख कर घबराने वालों ! बल्कि फ़क़त़ धूएं से बेचैन हो जाने वालों के लिये लम्ह़ए फ़िक्रिया है । ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा जलालुद्दीन सुयूत़ी शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَافِی "शर्हुस्सुदूर" में नक़्ल फ़रमाते हैं : "जब इन्सान **क़ब्र** में दाख़िल होता है तो वोह तमाम चीज़ें उस को डराने के लिये आ जाती हैं जिन से वोह दुन्या में डरता था और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से न डरता था।" (شَرْحُ الصُّدُور ص۱۱۲)

क्या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डरने वाला गुनाह कर सकता है ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! क्या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरने वाला नमाज़, रोज़ा क़ज़ा और ज़कात अदा करने में कोताही कर सकता है ? क्या ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ रखने वाला डन्डी मार कर सौदा चला सकता, ह़राम रोज़ी कमा सकता सूद व रिश्वत का लैन दैन कर सकता है ? दाढ़ी मुंडाना और एक मुठ्ठी से घटाना दोनों ह़राम है तो क्या ख़ौफ़े ख़ुदा रखने वाला दाढ़ी मुंडवा सकता या ख़श्ख़शी रखवा सकता है ? क्या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरने वाला T.V., V.C.R. और इन्टरनेट पर फ़िल्में डिरामे देख सकता और गाने बाजे सुन सकता है ? क्या ख़ौफ़े ख़ुदा रखने वाला मां, बाप, भाई, बहनों, रिश्तेदारों बल्कि आ़म मुसल्मानों का दिल दुखा सकता है ? क्या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरने वाला गाली गलोच, झूट, ग़ीबत, चुग़ली, वा'दा ख़िलाफ़ी, बद निगाही, बे ह़याई, बे पर्दगी वग़ैरा वग़ैरा जराइम कर सकता है ? क्या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरने वाला चोरी, डाका, दह्शत गर्दी और क़त्लो ग़ारत गरी जैसी घिनाउनी

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर दस मरतबा सुब्ह़ और दस मरतबा शाम दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी। (مجمع الزوائد)

वारिदातें कर सकता है ? त़रह़ त़रह़ के गुनाहों में मुलव्वस रहने वाले एक बार फिर कान खोल कर सुन लें कि "जब इन्सान **क़ब्र** में दाख़िल होता है तो वोह तमाम चीज़ें उस को डराने के लिये आ जाती हैं जिन से वोह दुन्या में डरता था और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से न डरता था।" (ایضاً)

पड़ोसी मुर्दों की पुकार

बे नमाज़ियों, बिला उ़ज़्रे शर-ई माहे र-मज़ान के रोज़े क़ज़ा कर डालने वालों, फ़िल्में डिरामे देखने वालों, गाने बाजे सुनने वालों, मां बाप का दिल दुखाने वालों, दाढ़ी मुंडाने वालों, या एक मुठ्ठी से घटाने वालों और त़रह़ त़रह़ की ना फ़रमानियां करने वालों के लिये लम्ह़ए फ़िक्रिया है कि **हुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِی नक़्ल फ़रमाते हैं : "जब (गुनाहगार) मुर्दे को क़ब्र में रख देते हैं और उस पर अ़ज़ाब का सिल्सिला शुरूअ़ हो जाता है तो उस के पड़ोसी मुर्दे उस से कहते हैं : "ऐ अपने पड़ोसियों और भाइयों के बा'द दुन्या में रहने वाले ! क्या तेरे लिये हमारे मुआ़-मले में कोई इ़ब्रत न थी ? क्या हमारे तुझ से पहले (दुन्या से) से चले जाने में तेरे लिये ग़ौरो फ़िक्र का कोई मक़ाम न था ? क्या तूने हमारे सिल्सिलए आ'माल का ख़त्म होना न देखा ? तुझे तो मोहलत थी तूने वोह नेकियां क्यूं न कर लीं जो तेरे भाई न कर सके।" ज़मीन का गोशा उसे पुकार कर कहता है : "ऐ दुन्याए ज़ाहिर से धोका खाने वाले ! तुझे उन से इ़ब्रत क्यूं न हुई जो तुझ से पहले यहां आ चुके थे और उन्हें भी दुन्या ने धोके में डाल रखा था।" (اِحیاءُ العُلوم ج۵ ص۲۰۳)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! ह़क़ीक़त येह है कि हर मरने वाला मरते ही गोया येह पैग़ाम देता चला जाता है कि जिस त़रह़ मैं मर गया हूं आप को भी मरना पड़ जाएगा, जिस त़रह़ मुझे मनों मिट्टी तले दफ़्न किया जाने वाला है इसी त़रह़ तुम्हें भी दफ़्न किया जाएगा।

जनाज़ा आगे बढ़ कर कह रहा है ऐ जहां वालो !
मेरे पीछे चले आओ तुम्हारा रहनुमा मैं हूं

इम्तिह़ान सर पर है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आज कल जब स्कूल या कॉलेज का इम्तिह़ान क़रीब आता है तो त़-लबा उस की तय्यारियों में बहुत ज़ियादा मश्ग़ूल हो जाते हैं, रात दिन उन पर बस एक येही धुन सुवार होती है कि **इम्तिह़ान सर पर है,** इम्तिह़ान के लिये मेह़नत भी करते हैं, दुआएं भी मांगते हैं फिर बा'ज़ नादान तो **मुम्तह़िन** को रिश्वतें भी देते हैं, हर एक की फ़क़त़ एक ही आरज़ू होती है कि किसी त़रह़ मैं दुन्या के इम्तिह़ान में अच्छे नम्बरों से पास हो जाऊं। ऐ दुन्या के इम्तिह़ान की तय्यारियों में खो जाने वालो ! कान खोल कर सुन लीजिये ! एक इम्तिह़ान वोह भी है जो **क़ब्र** में होने वाला है। ऐ काश ! **क़ब्र के इम्तिह़ान** की तय्यारी हमें नसीब हो जाती। आज अगर इम्कानी सुवालात (**IMPORTANTS**) मिल जाएं तो त़ालिबे इ़ल्म उस पर सारी सारी रात मेह़नत करते हैं, अगर नींद कुशा गोलियां खानी पड़ जाएं तो वोह भी खाते हैं। ऐ दुन्या के इम्तिह़ान की फ़िक्र करने वालो ! ह़ैरत है कि आप इम्कानी सुवालात पर बहुत ज़ियादा मेह़नत करते हैं, काश !

आप को इस बात का एह़सास हो जाता कि **क़ब्र** के सुवालात इम्कानी नहीं बल्कि यक़ीनी हैं जो हमें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूल, रसूले मक़्बूल, बीबी आमिना رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا के महकते फूल صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने पेशगी ही बता दिये हैं उस के जवाबात भी इर्शाद फ़रमा दिये हैं हाए अफ़्सोस ! **क़ब्र** के सुवालात व जवाबात की त़रफ़ हमारी कोई तवज्जोह ही नहीं । आह ! आज हम दुन्या में आ कर दुन्या की रंगीनियों में कुछ इस त़रह़ गुम हो गए कि हमें इस बात का एह़सास तक न रहा कि हमें मरना भी पड़ेगा ।

दिला ग़ाफ़िल न हो यक्दम येह दुन्या छोड़ जाना है
बग़ीचे छोड़ कर ख़ाली ज़मीं अन्दर समाना है
तेरा नाज़ुक बदन भाई जो लैटे सैज फूलों पर
येह होगा एक दिन बे जां इसे किरमों ने खाना है
तू अपनी मौत को मत भूल कर सामान चलने का
ज़मीं की ख़ाक पर सोना है ईंटों का सिरहाना है
न बैली हो सके भाई न बेटा बाप ते माई
तू क्यूं फिरता है सौदाई अ़मल ने काम आना है
अ़ज़ीज़ा ! याद कर जिस दिन कि इ़ज़्राईल आवेंगे
न जावे कोई तेरे संग अकेला तूने जाना है
जहां के शग़्ल में शाग़िल ख़ुदा के ज़िक्र से ग़ाफ़िल
करे दा'वा कि येह दुन्या मेरा दाइम ठिकाना है

ग़ुलाम इक दम न कर ग़फ़्लत ह़याती पे न हो ग़ुर्रा
ख़ुदा की याद कर हर दम कि जिस ने काम आना है

नक़्ल करने वाला ही काम्याब

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह तआ़ला आप सब पर अपना फ़ज़्लो करम फ़रमाए **अल्लाह तबा-र-क व तआ़ला** आप सब को मदीनए मुनव्वरह زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا में ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा जल्वए

महबूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में ईमानो आफ़िय्यत के साथ शहादत नसीब करे और येह सारी दुआएं ख़ाके मदीना के सदके़ मुझ सगे मदीना عُفِیَ عَنْهُ के हक़ में भी क़बूल फ़रमाए। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने महज़ अपने फ़ज़्लो करम से हमें ऐसा पाकीज़ा नमूना अ़ता फ़रमा दिया है कि जो मुसल्मान उस नमूने की जितनी अच्छी नक़्ल करेगा उतना ही वोह आ'ला काम्याब होगा। चुनान्चे **अल्लाह तबा-र-क व तआ़ला** उस मुक़द्दस नमूने का ए'लान पारह 21 **सू-रतुल अह़ज़ाब** की इक्कीसवीं आयते करीमा में इस त़रह फ़रमाता है :

لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِيْ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बेशक तुम्हें **रसूलुल्लाह** की पैरवी बेहतर है।

तो उस रह़मत वाले नमूने की जो नक़्ल करेगा वोही काम्याब होगा और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इस अ़ता कर्दा बे मिस्ल नमूने को छोड़ कर जो शैत़ान की पैरवी करेगा, ग़ैर मुस्लिमों के त़ौर त़रीके़ अपनाएगा वोह हरगिज़ काम्याब नहीं हो सकेगा।

बद नसीब दूल्हा सोया ही रह गया !

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह तआ़ला आप पर फ़ज़्लो करम करे, हो सकता है कि आप में से किसी के बारे में येह शोर बरपा हो जाए कि रात को तो येह भला चंगा सोया था लेकिन सुब्ह़ जब नोकरी के लिये जगाया गया तो मा'लूम हुवा कि आज तो वोह ऐसा सोया है कि अब क़ियामत तक सोया ही रहेगा, या'नी इस

की रूह़ परवाज़ कर चुकी है। हां हां येह बाबुल मदीना कराची में होने वाला एक दिल ख़राश वाक़िआ़ है एक नौ जवान की शादी हुई...... रुख़्सती की तारीख़ भी आ गई...... कल रुख़्सती होनी है रात को, शुक्राने के नवाफ़िल और शुक्राने में स-दक़ा व ख़ैरात करने के बजाए शैत़ान की पैरवी में नाचरंग की मह़फ़िल बरपा की गई, ख़ानदान की बहू बेटियां त़ब्ले की थाप पर रक़्स कर रही हैं और मर्द भी नाच नाच कर अपने बे ढंगे फ़न का मुज़ा-हरा कर रहे हैं, रात भर ऊधम मचा कर जब फ़ज्र की अज़ानें शुरूअ़ हुईं तो बजाए मस्जिद का रुख़ करने के लोग सोने के लिये चले गए, दूल्हा भी अपने बिस्तर पर लैटा, रात भर की थकन की वजह से आंख लग गई। प्यारे इस्लामी भाइयो ! ज़रा कलेजा थाम कर सुनिये ! जुमुआ़ का दिन था मां ने दोपहर के बारह बजे किसी को भेजा कि मेरे लाल को उठा दो आज जुमुआ़ का दिन है जल्दी जल्दी ग़ुस्ल कर ले और तय्यारी करे कि आज उस की दुल्हन घर आने वाली है। जगाने के लिये घर का एक अ़ज़ीज़ पहुंचता है, आवाज़ें देता है, लेकिन दूल्हे मियां जवाब नहीं दे रहे, ओहो ! आख़िर रात की इतनी भी क्या थकन कि आंख ही नहीं खुल रही ! मगर जब हिला जुला कर देखा तो उस की चीख़ें निकल गईं कि येह तो हमेशा के लिये सो गया है ! कोहराम मच गया, शादी का घर मातम कदा बन गया, जहां अभी रात धूम से शादियाने बज रहे थे वहां अब आहो बुका का शोर बरपा हो गया, जहां हंसी के फ़व्वारे उबल रहे थे, वहां आंसूओं के धारे बहने लगे। तज्हीज़ो तक्फ़ीन की तय्यारियां होने लगीं, आह ! सद आह ! चन्द घन्टों के बा'द जिसे सर पर महक्ते फूलों का सहरा पहना कर सज धज के साथ सजी हुई कार में सुवार

किया जाना था वोह **बद नसीब दूल्हा** जनाज़े की डोली में सुवार कर दिया गया, बाराती "शादी हॉल" में पहुंचाने के बजाए उसे कन्धों पर लाद कर सूए क़ब्रिस्तान चल पड़े हैं। हाए ! हाए ! **बद नसीब दूल्हा** रोशनियों की चकाचौंद से निकल कर घुप अंधेरी क़ब्र की त़रफ़ बढ़ता चला जा रहा है, अब उसे रंग बिरंगे फूलों से सजे हुए और जग-मगाते **"ह़-ज-लए अ़रूसी"** में नहीं बल्कि कीड़े मकोड़ों से उभरती हुई **वह़्शत नाक क़ब्र** में रखा जाएगा। अब उस के बदन पर शादी का खुशनुमा, रंग बिरंगा, महक्ता जोड़ा नहीं बल्कि काफ़ूर की ग़मगीन खुश्बू में बसा हुवा कफ़न है और...... और...... देखते ही देखते **बद नसीब दूल्हा** क़ब्र में उतार दिया गया। आह !

तू ख़ुशी के फूल लेगा कब तलक ?
तू यहां ज़िन्दा रहेगा कब तलक ?

क़ब्र का होलनाक मन्ज़र

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमें भी एक दिन मरना और अंधेरी क़ब्र में उतरना पड़ेगा, हां ! हां ! हम अपने दफ़्न करने वालों को देख और सुन रहे होंगे, जब वोह मिट्टी डाल रहे होंगे येह दर्दनाक मन्ज़र भी नज़र आ रहा होगा, लेकिन बोल कुछ नहीं सकेंगे, दफ़्न करने के बा'द हमारे नाज़ उठाने वाले रुख़्सत हो रहे होंगे, क़ब्र में उन के क़दमों की चाप सुनाई दे रही होगी, दिल डूबा जा रहा होगा, इतने में अपने लम्बे लम्बे दांतों से क़ब्र की दीवारों को चीरते हुए ख़ौफ़नाक शक्लों वाले काले काले महीब बालों को लटकाए दो फ़िरिश्ते

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शख़्स है । (ترغیب و ترہیب)

मुन्कर नकीर क़ब्र में आ मौजूद होंगे, उन की आंखों से शो'ले निकल रहे होंगे और वोह सख़्ती के साथ बिठाएंगे और करख़्त (या'नी सख़्त) लहजे में सुवालात करेंगे, दुन्या की रंगीनियों में गुम सिर्फ़ दुन्यवी इम्तिह़ान की फ़िक्र करने वालों, फ़िल्में डिरामे देखने वालों, गाने बाजे सुनने वालों, दाढ़ी मुंडाने वालों, दाढ़ी को एक मुठ्ठी से घटाने वालों, ह़राम रोज़ी कमाने वालों, सूद और रिश्वत का लैन दैन करने वालों, अपने ओ़हदे और मन्सब से ना जाइज़ फ़ाएदा उठा कर मज़्लूमों की आहें लेने वालों, झूट बोलने वालों, ग़ीबत और चुग़ल ख़ोरी करने वालों, मां बाप का दिल दुखाने वालों, अपनी औलाद को शरीअ़त व सुन्नत के मुत़ाबिक़ तरबिय्यत न दिलाने वालों, मज़्हबी रंग न चढ़ जाए इस बुरी निय्यत से अपनी औलाद को सुन्नतों भरे म-दनी माह़ोल और **दा'वते इस्लामी** के इज्तिमाआ़त से रोकने वालों, अपनी औलाद को दाढ़ी मुबारक सजाने से रोकने वालों, बे पर्दगी करने वालियों और खुले बाल ले कर गलियों और बाज़ारों में घूमने वालियों, मेकअप कर के शॉपिंग सेन्टरों और रिश्तेदारों के घरों पर बे पर्दा जाने वालियों और दिलेरी के साथ त़रह़ त़रह़ के गुनाहों में रचे बसे रहने वालों से अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ नाराज़ हो गया और उस के प्यारे मह़बूब صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم रूठ गए और गुनाहों के सबब مَعَاذَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ईमान बरबाद हो गया तो क्या बनेगा ? बड़े सख़्त लहजे में सुवालात हो रहे हैं : **مَنْ رَّبُّکَ؟** "या'नी तेरा रब कौन है ? आह ! रब عَزَّوَجَلَّ को कब याद किया था ! जवाब नहीं बन पड़ रहा जो ईमान बरबाद कर बैठा उस की ज़बान से निकल रहा है : **ھَیْہَاتَ ھَیْہَاتَ لَااَدْرِی**

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े । (حاکم)

"या'नी अफ़्सोस ! अफ़्सोस ! मुझे कुछ नहीं मा'लूम ।" फिर पूछा जाएगा : مَادِيْنُکَ "या'नी तेरा दीन क्या है ?" **क़ब्र** में मुर्दा सोच रहा है कि मैं ने तो आज तक दुन्या ही बसाई थी, **क़ब्र के इम्तिहान** की तय्यारी की त़रफ़ कभी ज़ेह्न ही नहीं गया था, बस सिर्फ़ दुन्या की रंगीनियों ही में खोया हुवा था, मुझे क़ब्र के इम्तिहान का कहां पता था ! कुछ समझ नहीं आ रही और ज़बान से निकल रहा है : هَيْهَاتَ هَيْهَاتَ لَا اَدْرِی "या'नी अफ़्सोस ! अफ़्सोस ! मुझे कुछ नहीं मा'लूम ।" फिर एक ह़सीनो जमील नूर बरसाता जल्वा दिखाया जाएगा और सुवाल होगा : مَا كُنْتَ تَقُوْلُ فِيْ هٰذَا الرَّجُلِ "या'नी इन के बारे में तू क्या कहता था ?" पहचान कैसे होगी ! दाढ़ी से तो उन्सिय्यत थी ही नहीं, ग़ैर मुस्लिमों का त़रीक़ा अ़ज़ीज़ था, दाढ़ी मुंडाने का मा'मूल रहा, येह तो दाढ़ी शरीफ़ वाली शख़्सिय्यत है, बच्चे ने ज़ुल्फ़ें रखी थीं तो उस को मार मार कर कटवाने पर मजबूर किया था, येह बुज़ुर्ग तो ज़ुल्फ़ों वाले हैं, की-चेइन (KEY CHAIN) में फ़िल्म एक्ट्रेस का फ़ोटो रखा था, अपनी सूज़ूकी के पीछे भी फ़िल्म एक्ट्रेस का फ़ोटो लगा कर दूसरों को बद निगाही की दा'वते आ़म दे रखी थी, घर में भी एक्ट्रेस की तसावीर आवेज़ां कर रखी थीं, मुझे तो फ़नकारों और गुलूकारों की पहचान थी मा'लूम नहीं येह कौन साहि़ब हैं ? आह ! जिस का ख़ातिमा ईमान पर नहीं हुवा उस के मुंह से निकलेगा : هَيْهَاتَ هَيْهَاتَ لَا اَدْرِی "या'नी अफ़्सोस ! अफ़्सोस ! मुझे कुछ नहीं मा'लूम ।" इतने में जन्नत की खिड़की खुलेगी और फ़ौरन बन्द हो जाएगी फिर जहन्नम की खिड़की खुलेगी और कहा जाएगा : अगर तूने दुरुस्त जवाब दिये होते तो तेरे लिये वोह जन्नत की खिड़की थी । येह सुन कर उसे ह़सरत बालाए ह़सरत

होगी, कफ़न को आग के कफ़न से तब्दील कर दिया जाएगा, आग का बिछोना क़ब्र में बिछाया जाएगा, सांप और बिच्छू लिपट जाएंगे ।

आज मच्छर का भी डंक आह ! सहा जाता नहीं
क़ब्र में बिच्छू के डंक कैसे सहेगा भाई ?

जल्वए जानां صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

नमाज़ियों, र-मज़ान के रोज़े रखने वालों, ह़ज अदा करने वालों, पूरी ज़कात निकालने वालों, फ़िल्मों डिरामों से दूर भागने वालों, वा'दा ख़िलाफ़ी, बद अख़्लाक़ी, बद निगाही, झूट, ग़ीबत, चुग़ली और बे पर्दगियों से बचने वालों, **अल्लाह** की रिज़ा के लिये मीठे बोल बोलने वालों, **दा'वते इस्लामी** के मुबल्लिग़ों, सुन्नतों पर अ़मल कर के दूसरों को सुन्नतें सिखाने वालों, **फ़ैज़ाने सुन्नत** का दर्स देने और सुनने वालों, **नेकी की दा'वत** की धूमें मचाने वालों, **दा'वते इस्लामी** के सुन्नतों की तरबिय्यत के **म-दनी क़ाफ़िलों** में सफ़र करने वालों, अपने चेहरे को एक मुठ्ठी दाढ़ी से आरास्ता करने वालों, अपने सर पर इ़मामा शरीफ़ का ताज सजाने वालों, सुन्नतों भरा लिबास पहनने वालों को मुबारक हो कि जब मोमिन क़ब्र में जाएगा और उस से सुवाल होगा : مَنْ رَّبُّکَ؟ "या'नी तेरा रब कौन है ?" वोह कहेगा : رَبِّیَ اللّٰہ "या'नी मेरा रब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ है ।" مَادِیْنُکَ "या'नी तेरा दीन क्या है ?" ज़बान से निकलेगा : دِیْنِیَ الْاِسْلَام "या'नी मेरा दीन इस्लाम है" (اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ इसी इस्लाम की **महब्बत** में तो **दा'वते इस्लामी**

के **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र किया करता था । इसी इस्लाम की **महब्बत** में तो मैं मुआ-शरे के ता'ने सहता था, सुन्नतों पर अमल करता देख कर लोग मज़ाक़ उड़ाते थे, मगर मैं हंसी ख़ुशी बरदाश्त किया करता था, इसी दीने इस्लाम की ख़ातिर मेरी ज़िन्दगी वक़्फ़ थी) । फिर किसी का रहमत भरा जल्वा दिखाया जाएगा, तो ख़ुश नसीब नमाज़ियों, रोज़ादारों, हाजियों, फ़र्ज़ होने की सूरत में पूरी ज़कात अदा करने वालों, सुन्नतों पर अमल करने वालों, नेकी की दा'वत की धूमें मचाने वालों और **म-दनी क़ाफ़िलों** में सुन्नतों भरा सफ़र करने वालों का दिल ख़ुशी से झूम उठेगा । क्यूं कि दुन्या ही में बक़ौले मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان उश्शाक़ की येह कैफ़ियत होती है :

रूह न क्यूं हो मुज़्तरिब मौत के इन्तिज़ार में सुनता हूं मुझ को देखने आएंगे वोह मज़ार में

और इस हसरत को भी ज़िन्दगी भर परवान चढ़ाया था कि :

क़ब्र में सरकार आएं तो मैं क़दमों पर गिरूं गर फ़िरिश्ते भी उठाएं तो मैं उन से यूं कहूं

अब तो पाए नाज़ से मैं ऐ फ़िरिश्तो क्यूं उठूं मर के पहुंचा हूं यहां इस दिलरुबा के वासिते

तो जब सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार, हम ग़रीबों के ग़म गुसार, बे कसों के मददगार, शहन्शाहे वाला तबार, साहिबे पसीनए ख़ुश्बूदार, शफ़ीए रोज़े शुमार, जनाबे अहमदे मुख़्तार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बारे में पूछा जाएगा : **مَا كُنْتَ تَقُوْلُ فِىْ هٰذَا الرَّجُل** "इस मर्द के बारे में तू क्या कहता था ?" तो ज़बान से बे साख़्ता जारी होगा : **هُوَ رَسُوْلُ اللّٰهِ** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم "या'नी येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हैं" (येही तो मेरे

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़्फ़िरत है। (جامع صغیر)

वोह आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हैं, जिन का ज़िक्रे ख़ैर सुन कर मैं झूमता था और नामे नामी इस्मे गिरामी सुन कर अ़क़ीदत से अंगूठे चूमता था, येह तो मेरे वोही मीठे मीठे आक़ा **मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हैं कि जिन की याद मेरे लिये सरमायए ह़यात थी, येही तो मेरे प्यारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हैं कि जिन का ज़िक्र मेरे दिल का सुरूर और मेरी आंखों का नूर था)

तुम्हारी याद को कैसे न ज़िन्दगी समझूं — येही तो एक सहारा है ज़िन्दगी के लिये
मेरे तो आप ही सब कुछ हैं रह़मते आ़लम — मैं जी रहा हूं ज़माने में आप ही के लिये

और जब सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जल्वा दिखा कर तशरीफ़ ले जाने लगेंगे तो اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ क़दमों से लिपट कर अ़र्ज़ होगी : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم !

दिल भी प्यासा नज़र भी है प्यासी — क्या है ऐसी भी जाने की जल्दी
ठहरो ! ठहरो ! ज़रा जाने आ़लम ! — हम ने जी भर के देखा नहीं है

ऐ काश ! हमेशा के लिये हमारी क़ब्र हमारे मीठे मीठे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने जल्वों से बसा दें। बक़ौले मौलाना ह़सन रज़ा ख़ान عَلَیْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फिर तो......

क्यूं करें बज़्मे शबिस्ताने जिनां की ख़्वाहिश
जल्वए यार जो शम्ए शबे तन्हाई हो

आख़िरी सुवाल का जवाब देने के बा'द जहन्नम की खिड़की खुलेगी और मअ़न (या'नी फ़ौरन) बन्द हो जाएगी और जन्नत की खिड़की खुलेगी और कहा जाएगा : अगर तूने दुरुस्त जवाबात न दिये

होते तो तेरे लिये वोह दोज़ख़ की खिड़की थी। येह सुन कर उसे ख़ुशी बालाए ख़ुशी होगी, अब जन्नती कफ़न होगा, जन्नती बिछोना होगा, क़ब्र ता हद्दे नज़र वसीअ़ होगी और मज़े ही मज़े होंगे।

क़ब्र में लहराएंगे ता ह़श्र चश्मे नूर के
जल्वा फ़रमा होगी जब त़ल्अ़त रसूलुल्लाह की

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

जहन्नम के दरवाज़े पर नाम

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में झटपट अपने गुनाहों से तौबा कर लीजिये। सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : "जो कोई जान बूझ कर एक नमाज़ भी क़ज़ा कर देता है उस का नाम जहन्नम के दरवाज़े पर लिख दिया जाएगा जिस से वोह जहन्नम में दाख़िल होगा।" (حِلْيَةُ الْاَولياء ج٧ ص٢٩٩ حديث١٠٥٩٠) नमाज़ों की पाबन्दी कीजिये **बहारे शरीअ़त** जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 434 पर है : "ग़य्य जहन्नम में एक वादी है, जिस की गरमी और गहराई सब से ज़ियादा है, उस में एक कूआं है, जिस का नाम "**हबहब**" है, जब जहन्नम की आग बुझने पर आती है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस कूएं को खोल देता है, जिस से वोह ब दस्तूर भड़क्ने लगती है। येह कूआं बे नमाज़ियों और ज़ानियों और शराबियों और सूद ख़्वारों और मां बाप को ईज़ा देने वालों के लिये है।" **र-मज़ानुल मुबारक** के रोज़ों का एहतिमाम कीजिये, ह़दीसे पाक में इर्शाद फ़रमाया "जो माहे र-मज़ान का एक रोज़ा बिला उ़ज़्रे शर-ई व मरज़ क़ज़ा कर देता

है तो ज़माने भर के रोज़े उस की क़ज़ा नहीं हो सकते अगर्चे बा'द में रख भी ले।" (ترمذی ج۲ ص۱۷۵ حدیث ۷۳۳) **मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** पिछली नमाज़ें या रोज़े अगर बाक़ी हैं तो उन का ह़िसाब कर लीजिये, **क़ज़ा उम्री** कर लीजिये और जान बूझ कर की हुई ताख़ीर के गुनाह की तौबा भी कर लीजिये। फ़िल्में डिरामे देखने और बद निगाही करने वालों को डर जाना चाहिये कि **मुका-श-फ़तुल कुलूब** में है : "जो अपनी आंखों को ह़राम से पुर करेगा उस की आंखों में क़ियामत के रोज़ **अल्लाह तआला** आग भर देगा।" (مُکاشَفۃُ القُلوب ص۱۰) मां बाप को सताने वालों के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब की वईद है चुनान्चे ह़दीस शरीफ़ में आता है : मे'राज की रात, सरवरे काएनात, शाहे मौजूदात صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक मन्ज़र येह भी देखा कि कुछ लोग आग की शाख़ों से लटके हुए थे। अ़र्ज़ की गई : "येह मां बाप को गालियां बक्ते थे।" (الکبائر ص۴۸) दाढ़ी मुंडाने वालों या एक मुठ्ठी से घटाने वालों के लिये मक़ामे ग़ौर है कि ह़दीसे पाक में आता है : "मूंछों को ख़ूब पस्त करो दाढ़ियों को मुआ़फ़ी दो (या'नी बढ़ने दो) और यहूदियों जैसी सूरत मत बनाओ।"

(شرح معانی الآثار ج٤ ص٢٨ حديث٦٤٢٢، ٦٤٢٤)

सरकार का आ़शिक़ भी क्या दाढ़ी मुंडाता है ?
क्यूं इश्क़ का चेहरे से इज़्हार नहीं होता ?

काले बिच्छू

पाकिस्तान के मश्हूर शहर **कोएटा** के किसी क़रीबी गाउं में एक ला वारिस क्लीन शेव नौ जवान मरा पाया गया, लोगों ने

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रह़मतें भेजता है। (مسلم)

मिल कर उस को दफ़्ना दिया। इतने में मर्हूम के अ़ज़ीज़ आ पहुंचे और कहने लगे कि हम इस की लाश को निकाल कर ले जाएंगे और अपने गाउं में दफ़्नाएंगे। लिहाज़ा क़ब्र दोबारा खोदी गई, जब चेहरे की त़रफ़ से सिल हटाई गई तो लोगों की चीखें निकल गईं ! कफ़न चेहरे से हटा हुवा था और क्लीन शेव नौ जवान के चेहरे पर काले काले बिच्छूओं की काली काली दाढ़ी बनी हुई थी लोगों ने घबरा कर जल्दी जल्दी सिल रखी मिट्टी डाली और भाग गए।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हम सब को **अल्लाह तआ़ला** बिच्छूओं से बचाए। आमीन ! जल्दी जल्दी प्यारे प्यारे और शह्द से भी मीठे आक़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की **सुन्नत** चेहरे पर सजा लीजिये और जो अब तक मुंडाते या ख़शख़शी करवाते रहे हैं वोह इस गुनाह से तौबा भी कर लें। याद रखिये ! **दाढ़ी मुंडाना भी ह़राम है और एक मुठ्ठी से घटाना भी ह़राम।**

गेसू रखना सुन्नत है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मेरे मक्की म-दनी आक़ा मीठे मीठे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मुबारक ज़ुल्फ़ें कभी निस्फ़ (या'नी आधे) कान मुबारक तक तो कभी कान मुबारक की लौ तक और बा'ज़ अवक़ात बढ़ जातीं तो मुबारक शानों या'नी कन्धों को झूम झूम कर चूमने लगतीं। (الشمائل المحمدية للترمذى ص١٨،٣٠،٣٤) (हां ह़ज व उ़म्रह के एह़राम शरीफ़ से बाहर होने के लिये ह़ल्क़ फ़रमाया या'नी बाल मुबारक मुंडवाए हैं) इंग्लिश बाल रखना सुन्नत नहीं, गेसू (ज़ुल्फ़ें) सुन्नत हैं। बराए करम ! अपने सर पर **सुन्नत** के मुत़ाबिक़ गेसू सजा लीजिये। नीज़ मीठे मीठे

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो शख़्स मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया। (طبرانی)

आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मीठी मीठी सुन्नत **इमामा शरीफ़** का ताज भी सर पर सजा लीजिये।

इमामे की प्यारी ह़िकायत

मेरे आक़ा इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : (अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ के पोते ह़ज़रते सय्यिदुना) सालिम رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ फ़रमाते हैं : मैं अपने वालिदे माजिद (ह़ज़रते सय्यिदुना) **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا के हुज़ूर ह़ाज़िर हुवा और वोह इमामा बांध रहे थे, जब बांध चुके, मेरी त़रफ़ इल्तिफ़ात (या'नी तवज्जोह) कर के फ़रमाया : तुम इमामे को दोस्त रखते हो ? मैं ने अ़र्ज़ की : क्यूं नहीं ! फ़रमाया : इसे दोस्त रख्खो इ़ज़्ज़त पाओगे और जब शैत़ान तुम्हें देखेगा तुम से पीठ फेर लेगा, मैं ने **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को फ़रमाते सुना कि "इमामे के साथ एक नफ़्ल नमाज़ ख़्वाह फ़र्ज़ बे इमामे की पच्चीस नमाज़ों के बराबर है और इमामे के साथ एक जुमुआ़ बे इमामे के सत्तर जुमुओ़ं के बराबर है।" फिर इब्ने उ़मर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने फ़रमाया : ऐ फ़रज़न्द ! इमामा बांध कि फ़िरिश्ते जुमुआ़ के दिन इमामा बांधे आते हैं और सूरज डूबने तक इमामे वालों पर सलाम भेजते रहते हैं।

(फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 6, स. 215)

अगर सब अपनी म-दनी सोच बना लें कि आज से हम दाढ़ी, ज़ुल्फ़ों और इमामा शरीफ़ की सुन्नतें अपना लेंगे तो मैं समझता हूं कि दाढ़ी, ज़ुल्फ़ों और इमामा शरीफ़ का एक बार फिर रवाज पड़ जाएगा। या'नी जिस त़रह़ आज लोग ब कसरत दाढ़ियां मुंडाते हैं इसी त़रह़ कसीर

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तह़क़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया। (ابن سنی)

मुसल्मान दाढ़ियां सजाने लगेंगे और हर त़रफ़ दाढ़ी, ज़ुल्फ़ों और इ़मामे शरीफ़ की बहार आ जाएगी।

हम को मीठे मुस्त़फ़ा की सुन्नतों से प्यार है

اِنْ شَآءَاللّٰه दो जहां में अपना बेड़ा पार है

ना जाइज़ फ़ेशन करने वालों का अन्जाम

सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : (मे'राज की रात) मैं ने कुछ मर्दों को देखा जिन की खालें **आग की क़ैंचियों** से काटी जा रही थी, मैं ने कहा : येह कौन हैं ? जिब्रईले अमीन (عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) ने बताया : येह लोग ना जाइज़ अश्या से ज़ीनत ह़ासिल करते थे। और मैं ने एक बदबूदार गढ़ा देखा जिस में शोरो ग़ोग़ा बरपा था, मैं ने कहा : येह कौन हैं ? तो बताया : येह वोह औ़रतें हैं जो ना जाइज़ अश्या से ज़ीनत ह़ासिल करती थीं। (تاریخ بغداد ج۱ ص۴۱۵) याद रखिये ! नेल पॉलिश की तह नाख़ुनों पर जम जाती है लिहाज़ा ऐसी ह़ालत में वुज़ू करने से न वुज़ू होता है न ही नहाने से ग़ुस्ल उतरता है, जब वुज़ू व ग़ुस्ल न हो तो नमाज़ भी नहीं होती।

आइये अ़ह्द करें

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आज से अ़ह्द कर लीजिये कि मेरी कोई नमाज़ क़ज़ा नहीं होगी...... आज के बा'द र-मज़ान का कोई रोज़ा क़ज़ा नहीं होगा...... फ़िल्में डिरामे नहीं देखेंगे...... गाने बाजे नहीं सुनेंगे...... दाढ़ी नहीं मुंडाएंगे...... एक मुठ्ठी से नहीं घटाएंगे......

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उस पर दस रहमतें भेजता है । (مسلم)

اِنْ شَآءَ اللہ ।[1] और मर्दों के पाजामे के पाइंचे टख़्नों से ऊपर होने चाहिएं कि जो कपड़ा तकब्बुर से नीचे गिरता है वोह आग में है । ह़दीसे पाक में है : "एक शख़्स तकब्बुर से तहबन्द घसीट रहा था ज़मीन में धंसा दिया गया और क़ियामत तक वोह ज़मीन में धंसता रहेगा ।" (بُخاری ج٤ ص٤٧ حدیث٥٧٩٠) आज के बा'द सारे इस्लामी भाई अपने पाजामे टख़्नों से ऊपर रखा करेंगे...... اِنْ شَآءَ اللہ ...... اِنْ شَآءَ اللہ ...... اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुए **सुन्नत** की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआदत ह़ासिल करता हूं । ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे **नुबुव्वत,** मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शम्ए बज़्मे हिदायत, नोशए बज़्मे जन्नत صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जिस ने मेरी **सुन्नत** से **मह़ब्बत** की उस ने मुझ से **मह़ब्बत** की और जिस ने मुझ से **मह़ब्बत** की वोह **जन्नत** में मेरे साथ होगा । (اِبنِ عَساکِر ج٩ ص٣٤٣)

सीना तेरी सुन्नत का मदीना बने आक़ा
जन्नत में पड़ोसी मुझे तुम अपना बनाना

صَلُّوا عَلَی الْحَبِيب ! صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

"रब्बे मुस्त़फ़ा ! मेहमाने मदीना बना" के बीस हुरूफ़ की निस्बत से मेहमान नवाज़ी के 20 म-दनी फूल

❁ **छ फ़रामीने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ﴿1﴾ जो **अल्लाह** और क़ियामत पर ईमान रखता है उसे चाहिये कि **मेहमान** का एह़तिराम

---

1 : **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ बा'ज़ इज्तिमाआत में बयान के बा'द अपने मख़्सूस अन्दाज़ में अ़ह्द लेते हैं जिस का जवाब इज्तिमाअ़ में मौजूद इस्लामी भाई हाथ लहरा लहरा कर اِنْ شَآءَ اللہ के फ़लक शिगाफ़ ना'रों से देते हैं ।

करे (بخاری ج ٤ ص١٠٥ حديث٦٠١٨) **मुफ़स्सिरे** शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : **मेहमान का एह़तिराम** येह है कि उस से ख़न्दा पेशानी से मिले, उस के लिये खाने और दूसरी ख़िदमात का इन्तिज़ाम करे ह़त्तल इम्कान अपने हाथ से उस की ख़िदमत करे (मिरआत, जि. 6, स. 52) ﴾2﴿ जब कोई **मेहमान** किसी के यहां आता है तो अपना रिज़्क़ ले कर आता है और जब उस के यहां से जाता है तो साहि़बे ख़ाना के गुनाह बख़्शे जाने का सबब होता है (كَنْزُ الْعُمّال ج٩ ص١٠٧ حديث٢٥٨٣١) ﴾3﴿ जिस ने नमाज़ क़ाइम की, ज़कात अदा की, ह़ज अदा किया, र-मज़ान के रोज़े रखे और **मेहमान की मेहमान नवाज़ी की**, वोह जन्नत में दाख़िल होगा (اَلْمُعْجَمُ الْكَبِير ج١٢ ص١٠٦ حديث١٢٦٩٢) ﴾4﴿ जो शख़्स (बा वुजूदे कुदरत) मेहमान नवाज़ी नहीं करता उस में भलाई नहीं (مُسند إمام احمد بن حنبل ج ٦ ص ١٤٢ حديث ١٧٤٢٤) ﴾5﴿ आदमी की कम अक़्ली है कि वोह अपने **मेहमान** से ख़िदमत ले (اَلْجامِعُ الصَّغِير ص٢٨٨ حديث ٤٦٨٦) ﴾6﴿ सुन्नत येह है कि आदमी **मेहमान** को दरवाज़े तक रुख़्सत करने जाए (اِبن ماجه ج٤ ص٥٢ حديث٣٣٥٨) मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : हमारा मेहमान वोह है जो हम से मुलाक़ात के लिये बाहर से आए ख़्वाह उस से हमारी वाक़िफ़िय्यत पहले से हो या न हो जो हमारे लिये अपने ही मह़ल्ले या अपने शह्र में से हम से मिलने आए दो चार मिनट के लिये वोह मुलाक़ाती है मेहमान नहीं । उस की ख़ातिर तो करो मगर उस की दा'वत नहीं है और जो ना वाक़िफ़ शख़्स अपने काम के लिये हमारे पास आए वोह मेहमान नहीं जैसे ह़ाकिम या

मुफ़्ती के पास मुक़द्दमे वाले या फ़तवा वाले आते हैं येह ह़ाकिम के मेहमान नहीं (मिरआत, जि. 6, स. 54) ❁ मेहमान को चाहिये कि अपने मेज़बान की मसरूफ़ियात और ज़िम्मदारियों का लिह़ाज़ रखे । बहारे शरीअ़त जिल्द 3 **सफ़ह़ा** 391 पर ह़दीस नम्बर 14 है : "जो शख़्स **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) और क़ियामत के दिन पर ईमान रखता है, वोह मेहमान का इक्राम करे, एक दिन रात उस का जाएज़ा है (या'नी एक दिन उस की पूरी ख़ातिर दारी करे, अपने मक़्दूर भर उस के लिये तकल्लुफ़ का खाना तय्यार कराए) और ज़ियाफ़त तीन दिन है (या'नी एक दिन के बा'द तकल्लुफ़ न करे बल्कि जो ह़ाज़िर हो वोही पेश कर दे) और तीन दिन के बा'द स-दक़ा है, मेहमान के लिये येह ह़लाल नहीं कि उस के यहां ठहरा रहे कि उसे ह़रज में डाल दे" (بُخاری ج ٤ ص١٣٦ حديث ٦١٣٥) ❁ जब आप किसी के पास बतौरे मेहमान जाएं तो मुनासिब है कि अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ ह़स्बे हैसिय्यत मेज़बान या उस के बच्चों के लिये तोह़फ़ा लेते जाइये ❁ बा'ज़ अवक़ात ऐसा भी होता है कि अगर मेहमान कुछ तोह़फ़ा न लाए तो मेज़बान या उस के घर वाले मेहमान की बुराई के गुनाहों में पड़ते हैं । तो जहां यक़ीनी तौर पर या ज़न्ने ग़ालिब से ऐसी सूरते ह़ाल हो वहां मेहमान को चाहिये कि बिग़ैर मजबूरी के न जाए । ज़रूरतन जाए और तोह़फ़ा ले जाए तो ह़रज नहीं, अलबत्ता मेज़बान ने इस निय्यत से लिया कि अगर मेहमान तोह़फ़ा न लाता तो येह या'नी मेज़बान इस (मेहमान) की बुराइयां करता या बतौरे ख़ास निय्यत तो

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रहमतें भेजता है। (مسلم)

नहीं मगर इस का ऐसा बुरा मा'मूल है तो जहां इसे ग़ालिब गुमान हो कि लाने वाला इसी तौ़र पर या'नी शर से बचने के लिये लाया है तो अब लेने वाला मेज़बान गुनहगार और अ़ज़ाबे नार का ह़क़दार है और येह तोह़फ़ा इस के ह़क़ में **रिश्वत** है। हां अगर बुराई बयान करने की निय्यत न हो और न इस का ऐसा मा'मूल हो तो तोह़फ़ा क़बूल करने में ह़रज नहीं ❁ **सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : मेहमान को चार बातें ज़रूरी हैं : (1) जहां बिठाया जाए वहीं बैठे (2) जो कुछ उस के सामने पेश किया जाए उस पर ख़ुश हो, येह न हो कि कहने लगे : इस से अच्छा तो मैं अपने ही घर खाया करता हूं या इसी क़िस्म के दूसरे अल्फ़ाज़ (3) बिग़ैर इजाज़ते साह़िबे ख़ाना (या'नी मेज़बान से इजाज़त लिये बिग़ैर) वहां से न उठे और (4) जब वहां से जाए तो उस के लिये दुआ़ करे (عالمگیری ج٥ص٣٤٤) ❁ घर या खाने वग़ैरा के मुआ़-मलात में किसी क़िस्म की तन्क़ीद करे न ही झूटी ता'रीफ़। **मेज़बान** भी मेहमान को झूट के ख़त़रे में डालने वाले सुवालात न करे म-सलन कहना हमारा खाना कैसा था ? आप को पसन्द आया या नहीं ? ऐसे मौक़अ़ पर अगर न पसन्द होने के बा वुजूद **मेहमान** मुरव्वत में खाने की झूटी ता'रीफ़ करेगा तो गुनहगार होगा। इस त़रह़ का सुवाल भी न करे कि "आप ने पेट भर कर खाया या नहीं ?" कि यहां भी जवाबन झूट का अन्देशा है

कि आ़दते कम ख़ोरी या परहेज़ी या किसी भी मजबूरी के तहत कम खाने के बा वुजूद इसरार व तकरार से बचने के लिये **मेहमान** को कहना पड़ जाए कि "मैं ने ख़ूब डट कर खाया है" ❁ मेज़बान को चाहिये कि **मेहमान** से वक़्तन फ़ वक़्तन कहे कि "और खाओ" मगर इस पर इसरार न करे, कि कहीं इसरार की वजह से ज़ियादा न खा जाए और येह उस के लिये नुक़्सान देह हो (ایضاً) ❁ **हुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی फ़रमाते हैं : साथी कम खाता हो तो उस से तरग़ीबन कहे : खाइये ! लेकिन तीन बार से ज़ियादा न कहा जाए क्यूं कि येह "इसरार" करना और ह़द से बढ़ना हुवा (اِحیاءالعلوم ج۲ص۹) ❁ मेज़बान को बिल्कुल ख़ामोश न रहना चाहिये और येह भी न करना चाहिये कि खाना रख कर ग़ाइब हो जाए बल्कि वहां ह़ाज़िर रहे (عالمگیری ج۵ص۳۴۵) ❁ मेहमानों के सामने ख़ादिम वग़ैरा पर नाराज़ न हो (ایضاً) ❁ मेज़बान को चाहिये कि **मेहमान** की ख़ातिर दारी में ख़ुद मुश्ग़ूल हो, ख़ादिमों के ज़िम्मे इस को न छोड़े कि येह **ह़ज़रते** सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की सुन्नत है (ایضاً, बहारे शरीअ़त, जि. 3, स. 394) जो शख़्स अपने भाइयों (मेहमानों) के साथ खाता है उस से ह़िसाब न होगा (قوت القلوب ج۲ص۳۰۶) ❁ **हुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَلِی फ़रमाते हैं : जो शख़्स कम ख़ूराक हो जब वोह लोगों के साथ खाए तो

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तह़क़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया । (ابن سنی)

कुछ देर बा'द खाना शुरूअ़ करे और छोटे लुक़्मे उठाए और आहिस्ता आहिस्ता खाए ताकि आख़िर तक दूसरे लोगों का साथ दे सके (مِرْقَاۃُ الْمَفاتِیح ج۸ ص۸٤ تحتَ الحدیث ٤۲۰٤) ❁ अगर किसी ने इस लिये जल्दी से हाथ रोक लिया ताकि लोगों के दिलों में मक़ाम पैदा हो और इस को पेट का कुफ़्ले मदीना लगाने वाला (या'नी भूक से कम खाने वाला) तसव्वुर करें तो **रियाकार** और अ़ज़ाबे नार का ह़क़दार है ❁ अगर भूक से कुछ ज़ियादा इस लिये खा लिया कि **मेहमान** के साथ खा रहा है और मा'लूम है कि येह हाथ रोक देगा तो **मेहमान** शरमा जाएगा और सैर हो कर न खाएगा तो इस सूरत में भी कुछ ज़ियादा खा लेने की इजाज़त है जब कि इतनी ही ज़ियादती हो जिस से मे'दा ख़राब होने का अन्देशा न हो (مُلَخَّص از دُرِّمُختار ج٦ص٥٦١) ❁ एक शख़्स ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं एक शख़्स के यहां गया, उस ने मेरी मेहमानी नहीं की अब वोह मेरे यहां आए तो क्या मैं उस से बदला लूं ? इर्शाद फ़रमाया : नहीं, बल्कि तुम उस की मेहमानी करो ।

(تِرمِذی ج ۳ ص ٤۰٥ حدیث۲۰۱۳)

हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिये **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ दो कुतुब (1) **312** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब ''**बहारे शरीअ़त**'' हिस्सा **16** और (2) **120** सफ़ह़ात की किताब ''**सुन्नतें और आदाब**'' हदिय्यतन ह़ासिल कीजिये और पढ़िये । सुन्नतों की तरबिय्यत का एक बेहतरीन ज़रीआ़ **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी क़ाफ़िलों** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है ।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर दस मरतबा सुब्ह़ और दस मरतबा शाम दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी। (مجمع الزوائد)

लूटने रह़मतें क़ाफ़िले में चलो सीखने सुन्नतें क़ाफ़िले में चलो
होंगी ह़ल मुश्किलें क़ाफ़िले में चलो ख़त्म हों शामतें क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

येह रिसाला पढ़ कर दूसरे को दे दीजिये

शादी ग़मी की तक़रीबात, इज्तिमाआ़त, आ'रास और जुलूसे मीलाद वग़ैरा में **मक-त-बतुल मदीना** से शाएअ़ कर्दा रसाइल और म-दनी फूलों पर मुश्तमिल पेम्फ़लेट तक़्सीम कर के सवाब कमाइये, गाहकों को ब निय्यते सवाब तोह़फ़े में देने के लिये अपनी दुकानों पर भी रसाइल रखने का मा'मूल बनाइये, अख़्बार फ़रोशों या बच्चों के ज़रीए़ अपने मह़ल्ले के घर घर में माहाना कम अज़ कम एक अ़दद सुन्नतों भरा रिसाला या म-दनी फूलों का पेम्फ़लेट पहुंचा कर नेकी की दा'वत की धूमें मचाइये और ख़ूब सवाब कमाइये।

तालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़ व मग़्फ़िरत
बे ह़िसाब जन्नतुल
फ़िरदौस में आक़ा
का पड़ोस

8 ज़ुल ह़िज्जतिल ह़राम 1433 हि.
25-10-2012

फ़ेहरिस

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	1	बद नसीब दूल्हा सोया ही रह गया !	8
क़ब्र की डांट	2	क़ब्र का होलनाक मन्ज़र	10
मुबल्लिग़ों को मुबारक हो !	2	जल्वए जानां صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم	13
मेरे बाल बच्चे कहां हैं ?	3	जहन्नम के दरवाज़े पर नाम	16
क़ब्र में डराने वाली चीज़ें	3	काले बिच्छू	17
क्या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डरने वाला गुनाह कर सकता है ?	4	गेसू रखना सुन्नत है	18
पड़ोसी मुर्दों की पुकार	5	इमामे की प्यारी ह़िकायत	19
इम्तिह़ान सर पर है	6	ना जाइज़ फ़ेशन करने वालों का अन्जाम	20
नक़्ल करने वाला ही काम्याब	7	मेहमान नवाज़ी के 20 म-दनी फूल	21

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

सुन्नत की बहारें

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीगे़ कुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक **दा'वते इस्लामी** के महके महके म-दनी माहोल में ब कसरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुमा'रात इशा की नमाज़ के बा'द आप के शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की म-दनी इल्तिजा है। आ़शिक़ाने रसूल के **म-दनी क़ाफ़िलों** में ब निय्यते सवाब सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए़ **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और **ईमान की हिफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।**

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेहन बनाए कि "**मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।** اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ" अपनी इस्लाह़ की कोशिश के लिये "म-दनी इन्आ़मात" पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये "म-दनी क़ाफ़िलों" में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

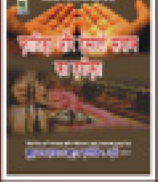

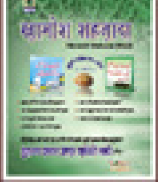

मक-त-बतुल मदीना®
दा'वते इस्लामी

फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बग़ीचे के सामने, मिरज़ापूर, अहमदआबाद-1, गुजरात, इन्डिया
Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net